हिमवन्ती -
हिन्दुकुश हिमालय की नारी

सदियों से पीढ़ी, दर पीढ़ी हिन्दुकुश हिमालय के कोने-कोने मे औरतों ने अपनी जिन्दगी गुजारी है। इस इलाके में उन्होंने अपने घर पहाड़ियों के किनारे, घाटियों और समतलों में बनाए है। हालांकि विभिन्न इतिहास भाषाओं और परम्पराओं से लैस अफगानिस्तान, बांगलादेश, भूटान, चीन, भारत, नेपाल, म्यानमार और पाकिस्तान की यह महिलाएं सांझेदार है अपने जीवन की चुनौतियों और परिश्रम को बांटने में।

इनका जीवन और रहन-सहन, खेती-बाड़ी के कार्यों में डूबा हुआ है। उनके लिए प्रकृति इष्ट है क्योंकि उसी ने ज्ञान रुपी भंडार दिया है जो सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हें विरासत में मिला है। उदाहरणत: सदियों पुरानी खेती-बाड़ी, पशुपालन और घरेलू पुरानी कामकाज की परंपरायें। हिन्दुकुश हिमालय की नारी की जिम्मेदारियां बहुत है। वह घर में खाना पकाना, सफाई करना, बर्तन और कपड़े धोना बच्चों की देखभाल करना आदी काम करती है। वह लकड़ियों, चारा और जल जुटाती है। वह पशुओं की देख-रेख और खेत में पुरुषों का हाथ बटाती है। वह खेती-बाड़ी के लिए खाद तैयार करती है और खेतों में बीज बोती है। वह फसल की कटाई और धान की पिटाई में भी सहायता करती है।

चाहे वो बांगलादेश के चित्तागोंग का पहाड़ी इलाका हो या उत्तर पाकिस्तान के रेगिस्तान, हिन्दुकुश हिमालय की नारीया अपने भू-भाग की विशेष परिस्थितियों के अनुकूल जीवन व्यतीत करती है। पर जो औरत दूर इलाकों में रहती है, वह अकेलापन अनुभव करती है और जीवन की आम सुविधाओं की कमी महसूस करती है। वह अपना जीवन सजोती है। पर्वतों और प्रकृति की पत्थर दिल सर जमीनों पर। कुछ औरते बुनती है, हस्त ग्रामिण उद्योग की वस्तुएं और आचार बनाती है और रेशम के कीड़े पालती है। यह कार्य उनके परिवार की आर्थिक आय में वृद्धि लाते है। हिन्दुकुश हिमालय की औरतें, ठोस और एक दृढ़ अस्तित्व रखती है। उनके मन में अपनी भूमि, पहाड़ियो व पर्वतों के लिए प्रेरणा, प्रेम और सम्मान भी है।

प्राकृतिक सम्पदा एवं नारी जीवन पर उसका प्रभाव

प्राकृतिक सम्पद हिन्दुकुश हिमालय की नारी के जीवन को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाती है। छोटी सी आयु से ही वह प्राकृतिक सम्पदा के विषय में व्यावहारिक ज्ञान रखना आरंभ कर देती है। वह अपने परिवार की मूल आवश्यकताएं – भोजन, जल, इधन और चारा की पूर्ति प्राकृतिक सम्पदा के उपयोगद्वारा करती है। बहुत सी महिलाएं दिन के अठारह घंटे घरेलू कार्य, कृषि संबंधी कार्य और वन संबंधी कार्यों में व्यतीत कर देती है। कई क्षेत्रों में उन्हें बहुत दूर तक जल की खोज में पैदल जाना पड़ता है। कई महिलाओंको स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो अधिक शारीरिक कार्यों से संबंधित है (भारी कम व बहुत सा समय जंगलों/पहाड़ों में बिताने से)। स्वास्थ्य सेवाएं आसानी से उपलब्ध न होने के कारण उन औरतों की सेहत पर असर पड़ती है।

कई बार ढाल वाली पहाड़ी टीलाओं के किनारों पर खेती करने पर भी वह अपने परिवार के लिए पर्याप्त मात्रा में अन्न नहीं उगा पाती है। यदि उसका गांव खादका कमी और बाढ़ एवं वन के विनाश का अनुभव करता है तो हिन्दुकुश हिमालय की नारी की समस्याऐं बढ़ जाती है। अधिकतर शुष्क गर्मी के मौसम व प्राकृतिक संकट के समय उसे व उसके परिवार को जीवीत रहने के लिए अन्य उपाय खोजने पड़ते है।

हिन्दुकुश हिमालय की नारी की भूमिका केवल गृह कार्य व खेती-बाड़ी तक सीमित नहीं है। कई महिलाऐं प्राकृतिक सम्पद का सही उपयोग कर लघु उद्योग आरम्भ कर उद्योगकर्मी बन जाती है। वे शाक-सब्जी, कुकुरमुत्ता व जड़ी बूटियां उगाती है। बांस जैसी प्राकृतिक साधन से वे टोकरियां, कपड़े और थैले बनाती है या वे स्थानीय वस्तुओं से कागज का उत्पादन करती है। वे अपने उत्पादनों को बाजार और निश्चित ग्राहकों तथा फुटकर खरीदारों को बेचती है। विभिन्न लक्ष्यों एव अभिलाषाओं के अतिरिक्त हिन्दुकुश हिमालय की प्रत्येक नारी के लिए प्राकृतिक सम्पद ही उसका जीवन है।

प्राचीन समय से हिन्दुकुश हिमालय की महिलाएं इस क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पद की मुख्य उपभोक्ता रही है।

नारी के लिए प्राकृतिक सम्पदा का नियंत्रण व संचालन

पहले दूसरे विषयों के विकास के कारण प्राकृतिक सम्पदा का महत्व कम हो गया। इसी कारण पर्वतीय परिवेश का अनुचित नुकसान हो गया। इस स्थिति में सुधार लाने के लिए नारी की कठिन भूमिका को भी महत्व नहीं दिया गया। हिन्दुकुश हिमालय के क्षेत्र में चालीस प्रतिशत भूमि वनों से घिरी हुई है। वृक्षों के कटने से गण्डकी, ब्रह्मपुत्र, गंगा एवं अन्य प्रमुख नदियों में काफी हद तक मिट्टी की मात्रा बढ़ गई है।

कई बार पर्यटन संबंधी योजनाओं के लिए पूंजी लगाने वाले लोभी व्यक्ति जल एवं स्थल जैसे प्राकृतिक स्रोतों पर बिना आज्ञा प्रवेश कर लेते हैं। कई स्थानों पर सरकारी संस्थाऐ एवं स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाले प्राकृतिक सम्पद की संचालन के विषय में स्वयं निर्णय कर लेते हैं। वे स्थानीय लोगों से इसके विषय में सलाह नहीं लेते। हिमालय क्षेत्र के एक विशेषज्ञ की सूचना विवरण के अनुसार ५०% (पचास प्रतिशत) जल स्रोत जो कर्णाली व हिमाचल प्रदेश के नदी किनारों से संबंधित हैं, वे सूख चुके हैं। इसी कारण जब तक महिलाऐं निर्णय लेने, संचालन में एवं सुरक्षा तथा संभालने में योगदान नहीं देंगी तब तक हिन्दुकुश हिमालय के क्षेत्र में प्राकृतिक सम्पदान की सुरक्षा और भरण-पोषण एक असम्भव एवं बहुत कठिन कार्य है। हिन्दुकुश हिमालय की नारी में प्राकृतिक सम्पद के प्रति जागरुकता की भी बहुत गहरा परिणाम हो सकता है। इसी से जो नींव कोमल पर्वतीय परिस्थितिक तत्र को जीवित रखती है उसका विनाश हो सकता है।

नारीयों को स्वयं से यह प्रश्न पूछना है कि वन, जल स्रोत और पशुओं की चरने वाली भूमि भावी पीढ़ीयों के लिए उपस्थित रहेगी अथवा नहीं। ऐतिहासिक घटनाओं में प्राकृतिक सम्पद के नियंत्रण के अधिकारों को पाने के लिए जो संघर्ष महिलाओं ने किए थे, उनमें से चिपको आदोलन पर्वतीय महिलाओ द्वारा दिखाई गई वीरता और दृढ़ता का ज्वलन्त उदाहरण है। इस प्रकार के सफल वृत्तातों से अन्य महिला वर्गो को प्रेरणा व साहस प्राप्त हो सकता है कि वे भी इसी प्रकार के कार्य करें। हिन्दुकुश हिमालय की नारी को आवश्यकता है कि वह प्राकृतिक सम्पद के अधिकारों के नियंत्रण और संचालन के लिए दृढ़तापूर्वक आगे बढ़े और स्थिर रहे। उसके लिए प्राकृतिक सम्पद केवल जीवन यापन का स्रोत हि नहीं, परंतु एक ऐसी वस्तु है जिससे वह हिन्दुकुश हिमालय क्षेत्र के परिवारों और जातियों के जीवन को ऊपर के स्तर तक उठाकर सुधार सकती हैं।

पर्वतीय पर्यावरण में महिलाऐं

बहुत सी महिलाएँ दिन में अठारह घंटे तक कार्य करती हे। उन्हें अपने कठोर परिश्रम के लिए परिवार अथवा सरकार से बहुत कम सम्मान प्राप्त होता हे।
– मायादेवी खनाल, हिमावन्ती

महिला समुदाय हिन्दुकुश हिमालय के विभिन्न भागों में राजनैतिक सम्पति, वन, शिक्षा तथा कार्यशीलता सम्बन्धी अधिकारों का समर्थन कर रही हैं। भारत मे महिला मण्डल, 'ग्रास-रुट' (तृणमूल) अथवा स्थानीय महिला संस्थाओं का समुदाय नेपाल मे और आगा खान (ग्रामीण समर्थक कार्यक्रम पाकिस्तान में) जैसे संगठन महिलाओं को अधिकार देने के लिए उचित कार्यवाही कर रहे है। लिंग सम्बन्धी विभिन्न विषयों के लिए वे अभियान कर रहे हैं उनमें से पारंपरिक भेद जैसे शिशु कन्या के प्रति भेद करना, बाल-विवाह, दहेज प्रथा को सम्बोधित किया जा रहा है। शराब सेवन एवं जुआ खेलने के विरोध में विभिन्न स्थानों में अभियान चल रहा है। परिवार नियोजन और ऋण सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रचार हो रहा है।

कृषि उत्पादन की विधियों मे सुधार लाकर खासकर चरने एवं घास काटने के क्षेत्र स्थानीय लोगों में वितारत किये जा रहे है। कई परिवार वन बचाव योजनाओं की सहायता से अपने पशुओं के लिए स्वयं चारा उगा रहे है। इसी कारण से उन महिलाओं की संख्या घट गई है जिन्हें बहुत दूर तक पैदल चलकर घास इकट्ठी करनी पड़ती है। कई औरतें चारा बेचकर अधिक धन कमाती है। गांवों में लोगो को पूंजी की स्थापना से खेतो को सींचने मे और जल अभाव सम्बन्धी समस्याओं को कम करने मे सहायता मिली है। क्षेत्रीय दौरा साक्षात्कार, उद्योग शाला एवं संगठन महिलाओं को सशक्त बना रहे है ताकि वे पर्वतीय प्राकृतिक सम्पद के संचालन के नेतृत्व में भूमिका निभा सकें।

हिन्दुकुश हिमालय के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं का स्वर सुनाई दे रहा है। जो व्यक्ति गैर-कानूनी तरीकों से वृक्षों को काट रहे है, उनके विरुद्ध न्यायालयों में मामले दर्ज कराए जा रहे है। हाल ही मे स्लेट, पत्थर, चूना एवं सिलमिट की खदान जो नदियों, झीलों जैसे जल स्रोतों को दूषित कर रहे है उन का प्रतिवाद महिला संस्थाएं कर रही है। महिलाओं का राजनैतिक रुप से सशक्तिकरण हो रहा है।

राष्ट्रीय एवं जिला-प्रदेश शासन महिलाओं को कार्यक्रमों मे भाग लेने के लिए प्रोत्साहन दे रहे है। समर्थन मत प्रदान परियोजना एवं निर्णय लेने के कार्य जो राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर किए जा रहे है, उनमें महिलाएं भाग ले रही है। बांगलादेश में संसद मे महिलाओं के लिए आरक्षण हो जाने से उनका योगदान राजनीति में बढ़ गया है। भारत के हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के लिए आरक्षण स्थानीय निर्वाचित स्तर पर तैंतिस प्रतिशत है। इससे महिला प्रतिनिधियों की संख्या सभाजन (सभापति) एवं ग्रामीण विकास समिति की सदस्यो के रुप में बढ़ गई है। वे आर्थिक शक्ति से युक्त हो रही है तथा अनऔपचारिक कक्षाओं द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रही है।

उत्तरीय पाकिस्तान के कुछ क्षेत्रों में आगा खान ग्रामीण समर्थक कार्यक्रम के कला कौशल के विकास के कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता कम हो गई है। इस कार्यक्रम के प्रारम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक महिला भागीदार के योगदान से थोड़ा-सा चंदा लेकर काफी धन राशि एकत्रित की गयी है। इस संचित कोष से धनराशि (उधार के रुप में) ग्रास-रुट्स संस्था की उन महिलाओं को दी जाती है जो उद्योगकर्मी बनने की इच्छा रखती है। खवातिन में एक व्यवसायिक अभ्यास केन्द्र है जिसमें महिलाओं के लिए सिलाई एवं शैक्षिक कक्षाऐं प्रदान की जाती है। इसी केन्द्र के द्वारा महिलाओं ने साग-सब्जी के बीज उगाना एवं मुर्गी पालन की क्रियायें भी सीख ली है। पहले की अपेक्षा, इस तरह कई महिलाओं अपनी आय में वृद्धि लाने का मार्ग सीख गया है। इसी प्रकार भूटान में ग्रामीण महिलाओं के आय वृद्धि की क्रियाओं पर राष्ट्रिय महिला परिषद का ध्यान केन्द्रित है। भारत के मेघालय के राज्य मे महिलाओं की भूमिका बदल रही है। नेपाल में महिलाऐं हस्तशिल्प उद्योग, विद्यालय एवं विश्वविद्यालय चला रही है।

महिलाओं के सम्मुख एक मात्र चुनौती है: विकास प्रक्रिया में स्वयं को मुख्य स्तोट में डालना। वह तभी सम्भव है जब महिलाएं शिक्षित हो।
– चित्रलेखा यादव, उप-सभामुख, प्रतिनिधि सभा, नेपाल

क्षेत्रीय विषय और चुनौतियाँ

१. शिक्षा

जन्म से लिंग भेद के कारण हिन्दुकुश हिमालय की महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव रखा जाता है। उसके लिए शिक्षा सम्बन्धी अवसरों को प्रधानता नहीं दी जाती क्योंकि उससे यह उम्मीद रखी जाती है कि वह अपने पति के घर काम करे और अपनी शिक्षा का उपयोग नहीं करे। कई बार माता-पिता यह महसूस करते है कि उनकी बेटी की पढ़ाई पर लगाई हुई पूंजी का लाभ अन्य परिवार उठाएगा, उनका अपना परिवार नहीं।

इसी कारण महिलाओं की साक्षरता का दर पुरुषों की अपेक्षा हिन्दुकुश हिमालय के कई देशों में कम है। बांगलादेश में साक्षरता दर बत्तीस प्रतिशत एवं चित्तागोंग के पहाड़ी क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर इससे भी कम है। नेपाल में साक्षार महिलाओं की पूरी संख्या पच्चीस प्रतिशत है। हालांकि महिलाओं ने बराबर के शिक्षा के अवसर मांगने आरम्भ कर दिए है, फिर भी परिणाम इससे कहीं अधिक अच्छा हो सकता था इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम तृणमूल (स्थानीय) महिलाओं तक केवल सीमित संख्या में ही पहुंच पा रहा है। बांगलादेश में महिला विकास योजना की स्थापना की गई है ताकि लड़कियों को विद्यालय जाने की प्रेरणा मिले। यह योजना उन्हें दसवीं कक्षा तक पढ़ने की सुविधा देती है प्रवेश शुल्क दिए बिना।

जो महिलाएँ अनपढ़ होती है वे अपने कानूनी अधिकारों के विषय में अनजान रह जाती है, विशेषकर जब उन्हें अपने देश की प्राकृतिक सम्पद को सम्भालना पड़ता है। अनपढ़ होने के कारण उनमें से कई महिलाओं के पास अधिक चुनाव और विकल्प नहीं होते उन कार्यों को चुनने में, जो उनके स्वास्थ्य के लिए कम हानिकारक होते है। हिन्दुकुश हिमालय के क्षेत्र में शिक्षा एक मुख्य आंचलिक समस्या है।

२. धार्मिक एवं सांस्कृतिक रीतियाँ

पीढ़ियों से यह परम्परागत रुप में स्वीकार किया गया है कि हिन्दुकुश हिमालय की नारी की भूमिका को पुरुष की अपेक्षा महत्व द्वितीय स्तर पर दिया जाता है। चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, परिवार के प्रति उसके योगदान को सर्वदा स्वीकृत माना

जाता है। ऐसे वातावरण में उसे परतंत्रता एवं गतिहीनता का आभास होता है। उसे घर एवं रहने के स्थान के बारे में निर्णय लेने में समर्थन नहीं प्राप्त होता है। कई महिलाओं को अपने विचारों को पुरुषों के सम्मुख खुलेआम व्यक्त करने में कठिनाई का अनुभव होता है। कई बार समाज भी नारी के विचारों को गंभीर रुप से स्वीकार नहीं करता है। हालांकी हिन्दू-कुश हिमालय की नारी प्राकृतिक सम्पद का उपयोग करने में अधिक लीन होती है और वह महत्वपूर्ण नीतियां बनाने के निर्णय चाहे वे स्थानीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर हो फिर भी उसकी क्षमताओं को नजरअन्दाज कर दिया जाता है। अफगानिस्तान में स्थिति गंभीर है, किसी भी क्षेत्र में महिला दिखाई नहीं देती। 1975-2001 तक मातृत्व मृत स्तर पचास प्रतिशत से भी अधिक बढ़ गया है। भारत के अरुणाचल प्रदेश में महिलाऐं पितृसत्तात्मक समाज में रहती है जहां पुरुष उनके निर्णयों का शासन करते है। भारत के उत्तराखण्ड के कई गांवों में, गांव की परियोजना एवं संचालन की विधि में महिलाओं को भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती है। नेपाल में जब महिलाऐं रजस्वला होती है उन्हें अछुत माना जाता है। उनका मन्दिरों एवं घर के अन्दर कई क्षेत्रों में प्रवेश निषेध होता है। उस समय उनके द्वारा पकाया हुआ भोजन उनके पति भी नहीं खाते है। भ्रुण हत्या व शिशु हत्या का दर हिन्दु-कुश हिमालय के कई क्षेत्रों में भयप्रद है। उत्तरी पाकिस्तान में जहां संयुक्त परिवार की प्रथा है वहां पुरुष की मुख्य निर्णय लेते है एवं उनकी पत्नियों को उनकी बात माननी पड़ती है। और तो से यह उम्मीद रखी जाती है कि वे अपने विचारों एवं धारणाओं के विषय में कम बोलें।

महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी विषयों को हीन रुप से सम्बोधित किया जाता है। धर्म का पाकिस्तान में शक्तिशाली प्रभाव होने के कारण परिवार नियोजन के प्रयोगों को अस्वीकृत किया जाता है। पिच्यासी प्रतिशत से भी अधिक प्रसव परम्परागत तरीकों से होते है। हिन्दु-कुश हिमालय की नारी की अपने पति पर आर्थिक निर्भरता पूर्व निर्धारित विचारधाराओं को भंग करने में उसके लिए कठिनाई उत्पन्न करती है। वह सुभेद्य है।

६. सम्पत्ति अधिकार

हिन्दुकुश हिमालय के कई देशों में महिलाऐं अपनी पारिवारिक भूमि से सम्बन्धित विषयों पर अधिकार नहीं रख पाती है। यद्यपि बांगलादेश में कानून महिलाओं की सम्पत्ति के अधिकारों की रक्षा करती है। वास्तव में अब भी महिलाओं की सम्पत्ति अधिकारों पर सत्ता नहीं रह पाती, एवं बहुत ही कम संख्या में महिलाएं चित्तागांग के पहाड़ी क्षेत्रों में जमींनदारिने है। भारत के मेघालय के राज्य में परिवार की सबसे छोटी बेटी को कुछ सम्पत्ति के अधिकार दिए जाते है।। उसके माता-पिता के घर में भी क्योंकी वे उसकी जिम्मेवारी बनते है, पर प्रयोग में उसके भाई एवं मामा ही उन अधिकारों के वास्तविक

स्वामी होते है। नेपाल मे महिलाओं की पहुंच सम्पत्ति के अधिकारो तक नही हो पाती। अविवाहित महिला को सम्पत्ति पैंतिस वर्ष की आयु पर मिलती है । परन्तु यह व्यवस्था बदल जाती है अगर वह विवाह कर लेती है।

४. राजनैतिक अधिकार

हिन्दुकुश हिमालय के क्षेत्रमें महिलाओं राजनीति मे भाग लेने की सुविधाऐं नही दी जाती। भारत की तुलना मे पाकिस्तान की महिलाऐं राजनैतिक रुप से पिछड़ी हुई है। नेपाल में सम्पूर्ण जन संख्या का आधा भाग महिलाओं से पूर्ण है फिर भी उन्हें राजनीति में भाग लेने से एवं राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक स्तर पर विश्वसनीय भूमिका निभाने से निरुत्साहित किया जाता है। प्रतिनिधि सभा एवं मंत्री मण्डल में महिला सदस्यों का प्रतिनिधित्व बहुत कम है।

तराई क्षेत्र में महिलाओं को ग्राम विकास मण्डल के सभाजन के पद के लिए चुनाव सम्बन्धी विधि में भाग लेने से रोका जाता है। कई बार जो निर्वाचित हो जाती है वे अपने अधिकारो को अपने पति को स्थानांतरित होने का अनुभव करती है । भारत में उत्तराखण्ड में पंचायत की विधि में तैतीस प्रतिशत महिलाओं का प्रतिनिधित्व है एवं दो हजार दो सौ छतीस महिलाऐं सभाजन का स्थान ग्रहण कर चुकी है। परन्तु अब भी उन्हे लिंग भेद सम्बन्धी समस्याओं का सामना कर ना पड़ता है।

५. काम काजी अवस्था

अधिकतर शेहरों एवं कस्बों मे महिलाऐं सरकारी एवं असार्वजनिक संस्थाओं में महत्वपूर्ण स्थानों पर नियुक्त है। फिर भी कई कार्य क्षेत्रों मे जहां महिलाऐं एवं पुरुष एक ही काम के लिए होड़ कर रहे है, वहां महिलाओं की छिपी हुई क्षमता एक अच्छे कर्मचारी के रुप में उसके लिंग के कारण हीनता का शिकार हो जाती है। अधिकतर स्त्रियों को उनके लिंग के अनुसार भूमिकाऐं दी जाती है जैसे मुंशीगिरी। उन्हें उनके किए हुए कार्यों के अनुसार कम वेतन मिलते है।

ग्रामिण क्षेत्रों में महिलाओं का कार्यभार बढ़ जाता है जब उनके पति गांव छोड़कर शहरों अथवा निकट के क्षेत्रों में काम के लिए निकल पड़ते है। सर्दी में महिलाओं को इन्धन एवं खाने के अभाव का भी सामना करना पड़ता है। उन्हें विभिन्न प्रकार के समाधान खोजने पड़ते है ताकि वे फसल, फलों के पेड़, सब्जियां को नाशकारक जन्तु, विभिन्न प्रकार की

बीमारीया, जगली पशु एवं अग्निकाण्डों से बचा पाऐं। अपने उत्पादनों को बाजार तक पहुंचाने के लिए उन्हें यातायात की सुविधाओ की समस्या का सामना करना पडता है। कई महिलाओ के पास आयोजन करने की कला की कमी होती हैं, जिनकी सहायता, से वे घर एव खेतों के कार्यो को सही प्रकार से सम्भाल पाती हैं। शिक्षित महिलाऐं हिन्दुकुश हिमालय के विभिन्न क्षेत्रो मे समाज सेवक, मुशी, मकानो की ठेकेदार, अध्यापिकाऐं, स्वास्थ्य सहायक एवं चिकित्सक बन गई हैं।

६. योजना सम्बन्धी विषय

कई बार महिलाऐं समस्याऐ अनुभव करती है जब योजना बनाने वाले उनके मामलों को सुनने के लिए तैयार नही रहते। कई अवस्थाओं में सरकारी वर्गो से व्यवहार करने में घबराती है। ऐसी स्थितियों में पर्यावरण सम्बन्धित गरीबी एव भेदभाव के विषय स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर बुरी तरह से सम्बोधित होते है। शासन निकायों के लिए यह संकटपूर्ण है कि वे स्थानीय स्तर के निर्णय को विकेन्द्रीकरण करदें ताकि नई योजना की रुपरेखा तैयार करने की विधि एवं उसे लागू करने मे स्थानीय लोगो एवं महिलाओं की आवश्यकताओं का समावेश हो पाए। ऐसा नही करने से उस योजना को थोडे एवं लम्बे समय के लिए समस्याओं का अनुभव करना पड़ सकता है।

हिमावन्ती को आवश्यकता है कि वह आपने सम्बन्धों को अफगानिस्तान तथा म्यानमार जैसे देशों तक विकसित कर अंत में प्राकृतिक सम्पद से खाद्यानों, फल, ईधन एवं उर्जा के उत्पादन करना जिनका उपयोग घरेलु कार्यो के लिए किया जा सके।

हिन्दुकुश हिमालय की महिलाओं द्वारा चुनौतियों का सामना

आगामी वर्षो में हिन्दुकुश हिमालय को अपने प्रजनो को पुष्ट करने की आवश्यकता है। इसके लिए महिला मण्डल, हिमावन्ती एवं आगा खान ग्रामीण सहयोग कार्यक्रम जैसी संस्थाओं को अपने कार्य संभालने एवं आगे बढाने पड़ेंगें। इन संस्थाओं को हिन्दुकुश हिमालय की महिलाओं की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी पड़ेगी एवं अपने कार्य कौशल की नीती महिलाओं के अधिकारों पर रखनी पडेगी।

जानकारी का प्रचार विशेष क्षेत्रों में करना पड़ेगा ताकि उन महिलाओ में रुचि जगाई जा सके जो प्राकृतिक सम्पद के सचालन के लिए काम कर रही हैं। महिला मण्डलों की लम्बी अवधि के लिए (स्पष्ट दृष्टि) से योजनाऐं बनानी पड़ेगी। जहां तक सम्भव हो उनके संविधान में संशोधन की आवश्यकता है जो सदस्यों के विवरण मिलने पर आधारित हों।

संस्थाओं को अपनी दुर्बलता एवं शक्ति की पहचान होनी चाहिए एवं पर्यावरण विशेषज्ञों, कानूनी सलाहकारों तथा समाज सेवकों से सहायता लेनी चाहिए। नारी संगठनों को अपने विशिष्ट मत के कार्यों की वकालत का प्रोत्साहन बढ़ा देना चाहिए। उन्हे शक्तिशाली दबाव डालने वाला गुट बनकर स्थानीय एवं गैर-सरकारी संस्थाओं का समर्थन प्राप्त करना चाहिए। उनहें अपनी कार्य क्षमता का विकास कर अन्तर्राष्ट्रिय वकालत का स्तर एवं विशिष्ट मत के स्वर को बढ़ाने के स्तर तक पहुंचाना चाहिए। इससे उन्हें सहायता मिलेगी अपने कार्यो को बड़े स्तर पर शक्तिशाली बनाने मे एवं उनका विस्तार करने में पुरुषों का सहयोग आवश्यक है। जब तक महिलाओं को समाज एवं परिवार के अन्तर्गत (पतियों, भाईयों, बहनों, सासों एवं ससुरों से) सहयोग नही प्राप्त होगा तब तक वे अपने विषय मे पूर्ण रुप से आश्वस्त नही हो पाएगी। इसलिए लिंग समानता के कार्यक्रमों के प्रति जागृति आवश्यक है। स्थानीय एवं (राष्ट्रीय स्तरों पर) पुरुष प्रधान समाज में लिंग सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन लाना, जो महिला वर्ग के विरुद्ध पूर्वधारणा रखते है ।

हिन्दुकुश हिमालय की नारी के लिए सबसे बड़ी चुनौती है अपने उत्तरदायित्व को सम्बोधित करना। वह किस हद तक सशक्तता की प्रक्रिया मे प्रगति कर पाएगी वह उसके दृढ़ विश्वास पर निर्भर करता, जो भविष्य वह अपने आपको और अपने परिवार और समाज को देखने के लिए दे पायेगी। परिवर्तन के लिए कुछ कार्य हिन्दुकुश हिमालय की नारी को प्राकृतिक उत्पादन के संचालन में अपनी भूमिका एवं योजना को सीखना व समझना पड़ेगा। उसे उस ज्ञान को जो उसके पास है उसका विस्तार कर उसे आगे बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिए आवश्यकता है कि महिलाऐं साक्षर एवं शिक्षित बन जाऐं। इसके लिए आवश्यकता है कि सरकार उन योजनाऐं पर विचार कर उनका ढांचा तैयार करे जिनके द्वारा महिलाओं की शिक्षा को प्रधानता प्राप्त होती हो।

देश के योजना बनाने वालों के प्रति लक्ष्य रखते हुए एक सुग्राह्य प्रक्रिया की होना आवश्यक है। यह सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर इन्हें एक स्पष्ट विचार रखना चाहिए एवं महिलाओं के लिए कार्यक्रमो को लागू करने के उत्तरदायित्वको उठाना चाहिए। उन्हें अपनी सरकार से स्वतन्त्र होकर वार्तालाप करनी चाहिए एवं जहां आवश्यक हो कानूनी एवं संस्था सम्बन्धी सुधारों का परिचय करना आरम्भ करना चाहिए। योजना बनाने के स्तर पर आवश्यक है कि अधिक महिलाएँ इन स्थानो के लिए योग्य बने।

इसके द्वारा महिलाओं के दृष्टिकोण एवं विचारो बनाने के लिए अवसर प्राप्त होगा ताकि संचालन एवं निर्णय लेने की विधि मे एवं उनका विश्लेषण एवं समावेश हो पाए। ग्रामीण क्षेत्रो मे बनाए गए योजनाओ मे महिलाओं की भूमिका को वन सम्पद के विकास एवं संचालन तथा वन्य उपभोक्ता संगठन में उनका योगदान बढ़ाने मे स्पष्ट रुप से परिभाषित होना चाहिए। महिलाओं के लिए सरलता से निर्णय लेने के अवसर होने चाहिए, योजनाओं के ढांचों तैयार हो रहे हों या वे लागू

गीतांजलि

जहाँ मन निर्भय
और फिर उन्नत
जहाँ ज्ञान निशुल्क, स्वतंत्र
जहाँ विश्व अटूट, अखंडित, असिमित
तंग सिमायों और उंची दिवारों से
जहाँ शब्द उपजे
सत्य की गहरी कोख से
जहाँ निरन्तर अथक प्रयत्न हो,
बांहे बढ़े
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के ओर
जहाँ सोच और तर्क निरंकुश
भटक न गया हो
रुढ़िवादी परम्पराओं के
मैंला मार्ग में
जहाँ मन निरन्तर प्रगतिशील हो
निज कृपा से
सदैव विस्तृत
सुचिन्तन और सुकर्म में
स्वतन्त्रता के उस स्वर्ग में
मेरे परमेश्वर
हिन्दुकुश हिमालय जाग

किए जा रहे हों। समान संख्या में महिला एवं पुरुष भागीदारों को लाभ देने के लिए सही विश्लेषण एवं चिंतन के द्वारा लोक समाज विकास की योजनाओं को केन्द्रित रहना चाहिए। आज हिन्दुकुश हिमालय की नारी के लिए प्राकृतिक सम्पद का संचालन केवल प्राकृतिक सम्पदका बचाव एवं सुरक्षा नही है, परन्तु उनको पूर्व पुनर्जीवित अवस्था में पहुंचाना है अपने चतुर एवं सही प्रयोग द्वारा।

एक विषय अध्ययन – हिमावन्ती

प्राकृतिक सम्पदा के संचालन के लिए जो अनेक संस्थाएं हिन्दुकुश हिमालय क्षेत्र में कार्य कर रही है उनमे से हिमावन्ती एक है। प्राकृतिक सम्पदा के संचालन में महिलाओं के सशक्तिकरण द्वारा ऐसी संस्थायें ठोस रुप से कई महिलाओं को सहारा देती हैं, जो पर्यावरण की रक्षा एवं बचाव में विश्वास रखती है । यह संस्थाएं कार्य प्रणालियों, कार्य नीतियों एवं गोष्ठियों का निर्माण करती है। संस्था की दुर्बलता और ताकत को आंकने के लिए, कई कार्यक्रमों को लागू कर उनका निर्देशन व समीक्षा तथा मस्तिष्क को झिंझोड़ने वाले विवादों रखा जाता है।

हिमावन्ती यह उदाहरण प्रस्तुत कर रही है कि हिन्दुकुश हिमालय की महिलाएं किस तरह सही रुप से प्राकृतिक सम्पद के संचालन में संगठित प्रयत्न द्वारा सशक्त कर रही है। हिमावन्ती की संस्थापना सन् 1995 में हुई थी। उस समय सात सदस्यों की संस्था का निर्माण नेपाल में हुआ था। एक उद्योगशाला गठित हुई थी जिसके फलस्वरुप एक गोष्ठी का निर्माण हुआ जिसमें भारत एवं पाकिस्तान के सदस्य थे। बैठक सभाएं एवं उद्योगशालाएं चलती रही सन् 1999 अक्टूबर में हिमावन्ती के संस्था सम्बन्धी विकास में एक नयां मोड़ देखा।

एक क्षेत्रिय उद्योगशाला का आयोजना हुआ जिसमें दो सौ से अधिक हिन्दुकुश हिमालय की क्षेत्र की महिलाओं ने योगदान दिया। इसमें प्राकृतिक सम्पद के संचालन के मुख्य विषयों पर विचार किया गया। इस उद्योगशाला के द्वारा, भूटान, बांगलादेश, नेपाल एवं पाकिस्तान तथा भारत के सदस्यों ने अच्छे कार्य सम्बन्धी सूत्रों की स्थापना की, एवं यह प्रणालिया वे हिमावन्ती के कार्य को अपने देशों में आगे बढ़ाएगें। आज भी यह संस्था सभाओं, उद्योगशालाओं, परिसंवादों, तात्विक कार्यों का आयोजना करती है विभिन्न वर्गों के साथ, जिनकी मिलती जुलती सोच होती है। इसने हिन्दुकुश हिमालयों के अन्य देशों में शाखाओं की स्थापना की है।

भूटान का गीत

दोस्तों आओ आगे बढ़ें एक जुट मन
यह एक जुरता, एक जुट होना होगी...
सुप्त निशा, उदय उषा, आनन्द ही आनन्द
हम एक जुट है आज, धन्यवाद परमानन्द
इस आरंभ के लिए आज
यहां उपस्थित भगवान का है वरदान
हमारे पूर्व जन्मों के सुकर्मों के लिए
आओ प्रण ले एक जुटता का, हे भगवान
दूर आकाश में प्रज्वलित हो अपने गीत व मान

– अनुवाद अरुण कुकरेजा

हिमावन्ती जैसी सस्थाएं महिलाओं की प्राकृतिक सम्पद के संचालन की सशक्तिकरण भूमिका का प्रचार करने में एवं सूचना फैलाने में सहायता करती है। जो महिलाएं ग्रामीण एवं अशिक्षित होती है वे उनके सशक्तिकरण को प्राथमिकता देती है। कई बार वे महिलाएं को प्रोत्साहित करते हैं ताकि वे पहली बार एकत्रित होकर सशक्तिकरण की विधी में भाग ले।

महिलाओं में कई स्पष्ट परिवर्तन देखे जाते हैं। उनमे से कई आत्मविश्वास सहित जनता के समक्ष बोल पाती हैं। एवं अपने सस्थाओ का संचालन कर पाती हैं। वे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमो में भाग लेकर अपनी प्रतिभाओं का विकास कर पाती है।

उद्योगशालाएं, परिसदे और सभाएं सहायता करती है, इन संस्थाओं की कार्य क्षमताओं को बढ़ाने में। हिन्दुकुश हिमालयों के विभिन्न क्षेत्रों मे आयोजित होने के कारण वे महिलाए को एक मंच प्रदान करती हैं, जहां वे अपने अनुभवें का आदान-प्रदान कर सकें एव अन्य देशो की महिलाओं का प्राकृतिक सम्पद के संचालन में सशक्तिकरण भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त कर सकें। अपने स्वप्नों, चुनौतियो एवं आकांक्षाओ को बांटकर महिलाएं उन समस्याओं एवं विषयों को जिनका सामना वे आमतौर पर करती है, उनका सामूहिक रुप से हल निकाल पाती है। वे सामूहिक विचार-विमर्शो में भाग ले पाती है एवं सुझावो का योगदान दे पाती हैं जिनका उपभोग साधारण राष्ट्रीय स्तर की कार्य प्रणालीयों के विकास के लिए किया जाता है।

महिला वर्ग को अथवा व्यक्तिगत महिलाओं को अवसर प्रदान होते हैं ताकि वे अपने संबंध एक-दुसरे के साथ निर्माण कर पाएं। बाह्य सहयोग के अपेक्षा आयवृद्धि अथवा इच्छापूर्वक कार्यो के योगदान विभिन्न आयवृद्धि के स्त्रोत हैं जो इन संस्थायों को अपने कार्य चलाने में सहायता देते है। आत्मनिर्भरता इन संस्थायो के जीवन को स्थिरता दे पायेगी क्योंकि वे हिन्दुकुश हिमालय की महिलाओ को एक शक्तिशाली चीजे प्रदान करती रहेंगी जिस पर उनके प्रयत्न ठोस रुप ले पाए।

महिलाओं में कई स्पष्ट परिवर्तन देखे जाते हैं। उनमें से कई आत्मविश्वास सहित जनता के समक्ष बोल पाती हैं एवं अपने संस्थाओं का संचालन कर पाती हैं। वे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी प्रतिभाओं का विकास कर पाती है।

भविष्य की ओर दृष्टि

हिन्दुकुश हिमालय की महिलाओं को प्राकृतिक सम्पदा के संचालन में सशक्त बनाना एक विशाल कार्य है। इसका तात्पर्य है कि जीवन के विभिन्न भागों से हजारों महिलाएं संगठित एवं एकत्रित होकर प्रयत्न करेंगी चुनौतियों का सामना कर के परिवर्तनों के लिए कार्य करने का। इस सशक्तिकरण विधी से "पानी मिलन" कार्यक्रम को और भी महत्व प्रदान होगा। एक शुभ कार्यक्रम जहां महिलाएं अपने-अपने देशों की प्रमुख नदियों से जल लाकर एक सामूहिक पात्र में डालेगी अनेकता में एकता का संकेत देने के लिए।

चाहे वह नारी किसी भी धर्म अथवा वर्ग की हो, सर्वप्रथम वह हिन्दुकुश हिमालय की महिला है। जिसका अपने पर्यावरण के प्रति लगन सच्चा व हृदयस्पर्शी है। जिस जल को वे लम्बी दुरी तक अपनी बहनों को बाँटने कि लिए लाती है। वह उसके लिए एवं उसके लोगों के लिए प्राकृतिक सम्पद के स्वाभाविक पावनता का रुप है। भौगौलिक सीमाएं इन महिलाओं को बधन में बाँध नहीं सकती जो चाहे अफगानिस्तान, बांगलादेश, भूटान, चीन, भारत, नेपाल, मायनामार, एवं पाकिस्तान की हो। प्राकृतिक सम्पद में अपनी सशक्तिकरण भूमिका को संबोधित करने से नए सहस्राब्दिक में सम्पूर्ण हिन्दु-कुश हिमालय क्षेत्र की महिला वर्गों को आवश्यकता है कि वे नियमित रुप से कार्य कर सकें, एवं दृढ सम्बन्ध बना पाएं, उन्हें आवश्यकता है कि वे "पानी मिलन" कार्यक्रम का जल बन जाएं। राजनैतिक क्षेत्रों में नेता महिला एवं पुरुष स्थानीय क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय वर्गों को आवश्यकता है एक जवाबदेयी चेतना का विकास करने का। उन्हें आवश्यकता है अपने कार्यों को सही रुप से अभिरुचि सावधानी एवं उत्तरदायित्व पर निर्धारित करने का। विभिन्न चुनौतियां बाल-विवाह से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में अपने अधिकारों की वकालत के लिए महिलाओं को अपनी भूमिका को फिर से परिभाषित करना पड़ेगा। अपने घरों एवं पर्यावरण में उन्हें वर्षों पुराने धार्मिक अथवा सामाजिक, सांस्कृतिक, कार्यों को प्रश्न करनी पड़ेगी एवं उन प्रस्तावों को सुनिश्चित करना पड़ेगा जो उन्हें सशक्त बना सके। इसका परिणाम होगा कार्य सम्बन्धी विधियां जिनके दौरान हिन्दु-कुश हिमालय की महिलाएं ठोस भूमिका निभा पायेगी। यह उनका अपना साहस, बल, संघर्ष होगा, जिससे वे परम्परागत रुढ़िवादी को चुनौती दे पायेंगी अपने परिवारों के अन्तर्गत। समय बीतने के बाद समाज भी उनकी सहायता करेंगे परम्परागत नारीयों ने प्रकृतिक सम्पद के संचालन के लिए परम्परागत क्षितिज पार देखना आवश्यक है।